शिक्षा को मिला 'उपाय', फुटपाथ शाला से जगा रहे अलख

भास्कर खबर | नागपुर

विश्व साक्षरता दिवस को लेकर सभी के अपने-अपने मायने है। अब शिक्षा का दायरा बदलता जा रहा है। प्राथमिक शिक्षा के अलावा तकनीक शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत प्रशासन द्वारा सभी को कम से कम प्राथमिक शिक्षा मिल सके, इस ओर प्रयासरत है। लेकिन समाज में ऐसा भी वर्ग है, जो शिक्षा से वंचित है। फुटपाथ पर भीख मांगकर जीवनयापन करने वाले परिवारों के बच्चों के लिए नागपुर की एक संस्था 'उपाय' की ओर से ऐसे बच्चों को शिक्षा से जोड़ने का प्रयास जारी है। सन् 2010 में आईटी सेक्टर से जुड़े वरुण श्रीवास्तव द्वारा फुटपाथ शाला के रूप में शुरू किया गया प्रयास अब व्यापक स्वरूप में तब्दील हो चुका है। फुटपाथ शाला के 26 सेंटर के माध्यम से तकरीबन 1500 बच्चों को शिक्षित करने की पहल जारी है। जिसके तहत नागपुर में 9, दिल्ली में 1, पुणा में 2, गुरुग्राम में 4 के साथ ही नागपुर के ग्रामीण भाग मौदा में 9 सेंटर शामिल हैं। जिसके तहत डाक्टर, इंजीनियर व शिक्षक पेशे से जुड़े लगभग 250 प्रतिनिधि अपनी सेवाएं दे रहे हैं। वहीं बात नागपुर की करें तो संतरा मार्केट, यशवंत स्टेडियम परिसर, जगदीश नगर, पागलखाना चौक, आईटी पार्क, लक्ष्मीनगर, माउंट रोड, एलआईसी चौक जैसे परिसर में फुटपाथ पर भीख मांगकर जीवनयापन करने वाले परिवार के बच्चों को शिक्षा प्रदान करने का कार्य संस्था द्वारा जारी है। संस्था के प्रतिनिधि सुबह व शाम को फुटपाथ शाला लगाकर कम से कम बेसिक पढ़ाई के अलावा, ड्राईंग, क्राफ्ट वर्क जैसी अन्य गतिविधियां सिखाते हैं। जिन्हें सिखने बच्चे भी लालायित रहते हैं। संतरा मार्केट की फुटपाथ शाला का छात्र शेखर जिसे सभी प्यार से माइकल बुलाते हैं डांस का बेहद शौक रखता है और भीख मांगकर जमा पैसों से फिल्में देखता है और शाला के बाद सभी को डांस की स्टेप करके दिखाता है। इसके साथ ही पढ़ाई को लेकर उसका जज्बा ऐसा है कि, हाथ पर रोज एबीसीडी लिखता है और पढ़ता रहता है। अब अंगरेजी और हिंदी में अपना नाम लिखना भी सीख गया है।

20 बच्चों का स्कूल में दाखिला

फुटपाथ शाला के अलावा संस्था की ओर से कुछ बच्चों का स्कूल में दाखिला किया गया है। जिसके तहत मनपा की मेयो अस्पताल के समीप सरस्वती विद्यालय व फूल मार्केट स्थित नेताजी स्कूल में 20 बच्चों का दाखिला किया गया है। इतना ही नहीं तो बच्चों को स्कूल लाने ले जाने के लिए स्कूल वैन की व्यवस्था भी की गई है। अभी और 15 बच्चों के एडमिशन की कोशिश जारी है।

स्कूलों से नहीं मिल रहा प्रतिसाद

नागपुर विभाग की जिम्मेदारी संभाल रही नीतू मिश्रा ने बताया कि बच्चों को स्कूल भेजने में जितनी परेशानी नहीं होती, उतनी स्कूल प्रबंधन की अनदेखी से हो रही है। फुटपाथ पर रहकर जीवनयापन करने वाले अन्य बच्चों की तुलना में साफ-सुथरे नहीं रहते। सुविधा मिलने के बावजूद यह बच्चे पैसे कमाने के चक्कर में स्कूल जाने पर इतना ध्यान नहीं देते। जिसे देखते हुए स्कूल वैन का प्रबंध किया गया। लेकिन स्कूल के चपरासी से बच्चों को स्कूल में पहुंचाने की बात कहने पर ध्यान नहीं दिया जाता। बार-बार हमारे प्रतिनिधि को स्कूल प्रबंधन को सुचित करना पड़ता है। लेकिन ऐसे बच्चों को कम से कम प्राथमिक शिक्षा प्राप्त हो सके, इस दिशा में संस्था का प्रयास जारी रहने की जानकारी भी मिश्रा ने दी।